



उग्र-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

# वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 46 कुल पृष्ठ-8 27 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2025

दयानन्दाब्द 201

सृष्टि सम्वत् 1960853126

सम्वत् 2082

मा. शु-07

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती एवं आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर

**विश्व विख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज के नेतृत्व में**

**हरिद्वार में ऐतिहासिक शोभा यात्रा का आयोजन**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी एवं अन्य गणमान्य संन्यासियों की रही उपस्थिति

**उत्तराखण्ड सरकार के पूर्व मंत्री स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने किया संयोजन**

**हजारों आर्यजनों, गुरुकुलों एवं शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं की रही भागीदारी**

**वर्ष 2026 में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान शताब्दी हरिद्वार में मनाने की हुई घोषणा**



दिनांक 23 नवम्बर, 2025 को स्वामी दर्शनानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार के पावन प्रांगण में एक भव्य एवं सांस्कृतिक गरिमा से परिपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती तथा आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर विश्व विख्यात योगगुरु पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के सान्निध्य में प्रातः यज्ञ के उपरान्त विशाल जनसभा का आयोजन हुआ जिसमें देश के विभिन्न भागों से हजारों आर्यजनों ने भाग लिया। लोगों का उमड़ता हुआ जनसमूह, गगनभेदी नारे लगाते हुए, गुरुकुल महाविद्यालय के विशाल प्रांगण में इकट्ठा हो रहा था और देखते ही देखते पूरा प्रांगण, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों, आर्य शिक्षण के छात्र-छात्राएं, आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं एवं हजारों आर्यजनों से खचाखच भर गया। इस विशाल आयोजन को करने के लिए ओजस्वी युवा संन्यासी एवं उत्तरखण्ड सरकार के पूर्व मंत्री स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, हरिद्वार के कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों के साथ अथक परिश्रम एवं जन सम्पर्क किया था जिसके परिणामस्वरूप यह ऐतिहासिक कार्यक्रम हो सका। इस आयोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था का मुख्य दायित्व पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज, आचार्य बालकृष्ण जी महाराज की प्रेरणा से पतंजलि योग पीठ की ओर से किया गया।

इस अवसर पर योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज ने मानसिक गुलामी, आर्थिक गुलामी, सांस्कृतिक गुलामी, शिक्षा में गुलामी आदि से देश को मुक्ति दिलाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेद का जो रास्ता हमें दिखाया था उसी रास्ते पर चलकर हम इन सभी गुलामियों से मुक्त हो सकते हैं और अपने भारत देश को विश्वगुरु का दर्जा पुनः दिला सकते हैं। स्वामी रामदेव जी ने उपस्थित जन-समूह का आह्वान किया कि लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली न केवल शिक्षा की गुलामी बल्कि हमारी मानसिक गुलामी के लिए जिम्मेदार है। अब समय आ गया है इस गुलामी से मुक्त होना होगा और अपने प्राचीन गौरव एवं वैदिक मान्यताओं को पुनः स्थापित करना होगा। इसके लिए यह आवश्यक है कि भारतीय शिक्षा बोर्ड जिसकी मान्यता भारत सरकार ने हमें दी है। आप सभी अपने विद्यालयों को, गुरुकुलों



और शिक्षण संस्थाओं को भारतीय शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध करें। भारतीय शिक्षा बोर्ड का पाठ्यक्रम पूरी तरह से प्राचीन, वैदिक ज्ञान-विज्ञान, गणित, भाषा एवं वैदिक वांगमय से ओत-प्रोत है। शिक्षा के साथ संस्कारों का महत्त्व सर्वविदित है, किन्तु लार्ड मैकाले की शिक्षा में संस्कारों का कोई स्थान नहीं है। भारतीय शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम में संस्कारों के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। स्वामी जी ने घोषणा की कि अगले 10 वर्ष में 5 लाख विद्यालयों को भारतीय शिक्षा बोर्ड के साथ जोड़ा जायेगा ताकि देश के करोड़ों बच्चे अपनी प्राचीन शिक्षा पद्धति एवं विचारों से जुड़ सकें। वे अपने प्राचीन इतिहास पर गर्व कर सकें। स्वामी रामदेव जी ने आर्य समाज को संगठित एवं मजबूत संगठन बनाने के लिए भी आर्यजनों का आह्वान किया और कहा कि वर्तमान समय में आर्य समाज को और अधिक सक्रियता के साथ कार्य करना चाहिए। इतिहास करवट ले रहा है, ऐसे वक्त पर आर्यजनों की भूमिका विशेष महत्त्व रखती है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती नहीं होते तो गुरुकुल नहीं होते और यदि गुरुकुल नहीं होते तो फिर स्वामी रामदेव और आज ये गुरुकुलों का जो जाल बिछा हुआ है ये भी नहीं होते। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की महिमा पर भी प्रकाश डाला और कहा कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से ही मुझे जीवन की सही दिशा मिली। जिसके परिणामस्वरूप आज हम मानवता की सेवा में समर्पित हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में जहां स्वामी रामदेव जी महाराज, आचार्य बालकृष्ण जी महाराज एवं स्वामी यतीश्वरानन्द जी का इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया, वहीं

उन्होंने आगामी वर्ष 2026 में हरिद्वार में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी समारोह आयोजित करने की घोषणा की। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि यह घोषणा पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज की स्वीकृति एवं प्रेरणा से ही की जा रही है। स्वामी जी ने हमें आश्वासन दिया कि यह शताब्दी समारोह ऐतिहासिक होगा और इसमें लाखों आर्यजन देश-विदेश में चल रहे सैकड़ों गुरुकुलों एवं अन्य आर्य शिक्षण संस्थाओं की छात्र-छात्राएं भाग लेंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि हरिद्वार से महर्षि दयानन्द जी और स्वामी श्रद्धानन्द जी का विशेष सम्बन्ध है, क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने गुरु विरजानन्द जी से शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त जब कार्य क्षेत्र में पदार्पण किया तो उनका सबसे पहला कदम 1867 में हरिद्वार के कुम्भ मेले में पड़ा और यहां उन्होंने पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराकर मेले में उपस्थित हजारों महामण्डलेश्वर, धर्मगुरु, शंकराचार्य एवं महन्तों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी। इसी प्रकार जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी वकालत छोड़कर सामाजिक जीवन में पदार्पण किया तो उन्होंने हरिद्वार में गंगा पार कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की जो आज पूरे विश्व में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नाम से विख्यात है। यही गुरुकुल कांगड़ी अंग्रेजों की नजर में बम्ब बनाने की फैक्ट्री के रूप में देखी गई और इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री रेम्जे मैक्डॉनल्ड, गुरुकुल में यह देखने के लिए आये कि बम्ब बनाने की फैक्ट्री कहां पर है। तब स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल के तेजस्वी ब्रह्मचारियों को गुरुकुल की फैक्ट्री में बनने वाले बम्ब बताकर इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री को आश्चर्यचकित कर दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली के प्रभाव को रोकने के लिए किया था। यदि देश की आजादी के बाद गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को सरकार ने ठीक तरीके से अपना लिया होता और देश में हजारों लाखों गुरुकुल खोल दिये होते तो आज देश की स्थिति कुछ और ही होती। आज जिन समस्याओं से हमारे देश का युवा वर्ग जूझ रहा है उन समस्याओं से जूझना नहीं पड़ता। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी का अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन ऐतिहासिक होगा।

स्वामी ओमवेश जी ने अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत करते हुए महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य



# आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयोगिता

— श्रीमती डॉ. कमल आनन्द

संस्कृत और संस्कार संस्कृति के संघटक हैं। किसी भी देश या राष्ट्र की जनभावना और जीवनक्रम के सुव्यवस्थित व सुरचित स्वरूप को उस राष्ट्र की संस्कृति कहते हैं। मनस्वी साहित्यकारों ने, चिन्तकों ने, राजनीतिज्ञों ने संस्कृति की विभिन्न परिभाषाएं दी हैं। श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा - मन और आत्मा की विशालता और व्यापकता को संस्कृति कहते हैं। काका कालेलकर संस्कृति को समाज की आत्मा मानते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार संस्कृति मनुष्य की विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति है। अतः संस्कृति उस क्रिया समूह का नाम है जिसके द्वारा विभिन्न व्यक्ति मानवजाति के सृजनात्मक जीवन में भाग लेते और उसे समृद्ध करते हैं। सच्ची संस्कृति तो मस्तिष्क, हृदय और हाथ का अनुशासन है और यह अनुशासन भारतीय संस्कृति की पहचान रही है। हमारी संस्कृति संस्कृत से ही सम्भूत और पल्लवित हो कर जी रही है। कर्मनिष्ठा, विश्वबन्धुता, समन्वय आदि जीवनदायी तत्वों की संवाहिका संस्कृत भाषा है। आज इस वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयुक्तता और भी बढ़कर सामने आ रही है क्योंकि इसी के कारण हमारी संस्कृति इतिहास के अनेक विकट झंझावातों में जूझने के बाद भी अपने स्वत्व को अक्षुण्ण रखने में समर्थ रही है। संस्कृत जीवन प्रक्रिया की धाती है, गौरव है। मानवता के संरक्षण, परिवर्धन और परिष्कार के लिए जीवन की पाथेयभूता यह संस्कृत भाषा ही है।

आधुनिक वैश्वीकरण के युग में भी प्रोफेसर कार्डोना ने संस्कृत को डंफबंस भाषा कहा है और इसके अध्ययन को आनन्द। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में संस्कृत की उपयुक्तता वर्णित है :-

**निकला जहाँ से आधुनिक यह भिन्न भाषा तत्व है,**

**रखती न भाषा एक भी संस्कृत समान महत्त्व है।**

**पाणिनि सदृश वैय्याकरण संसार भर में कौन है?**

**इस प्रश्न का सर्वत्र उत्तर उत्तरोत्तर यौन है।।**

विश्व संस्कृति के समग्र अध्ययन हेतु संस्कृत को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। इसमें हमारे जीवन दर्शन और चिन्तन के अक्षय स्रोत सुरक्षित हैं। यह विश्व की संजीविनी शक्ति है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः जैसी उदार परिकल्पना इसी का अवदान है।

वैश्वीकरण ने यन्त्र, संचार तथा अस्त्र-शस्त्रों के उत्पादन में विकास की ऊँचाइयों को छू लिया है परन्तु संस्कृति के क्षेत्र में हम पिछड़ गये हैं। शान्ति स्थापना में यू. एन. ओ. के प्रयास पर्याप्त सफल रहे हैं, परन्तु हम युद्ध और आतंक को समाप्त नहीं कर पाये। संचार व्यवस्था ने विश्व को एक छोटी इकाई में परिवर्तित कर, मानव को एक दूसरे के बहुत समीप कर दिया है। जल, स्थल और अन्तरिक्ष की दूरियाँ समाप्त प्राय हैं। ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ को एक नया अर्थ प्रदान किया जा रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में पूरा विश्व एक परिवार है। केवल वाह्य परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं की दृष्टि से नहीं। आज की स्थिति में यह वसुधा मात्र कुटुम्ब है जहाँ सामीप्य तो है सान्निध्य नहीं। सम्मिलन तो है, संवेदन नहीं। इस वैश्वीकरण का मानव सुखी परिवार की नींव, संविभाग, सान्निध्य, कुशल माङ्गल्य आदि से अनभिज्ञ है। उसे इन सब गुणों के पुनः परिभाषण की आवश्यकता है जिसमें संस्कृत की विशिष्ट भूमिका है।

संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित उसका विश्वबन्धुत्व कहीं खो गया है। भौतिकता ने उसे ग्रस लिया है और स्वार्थ परायणता का दंश उसे डस गया है। उसे उपनिषदों के ‘तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा’ तथा ‘मा गृधः कस्यस्विद् धनम्’ के ऐक्यबोध की आवश्यकता है। संस्कृत एकता और समग्रता के स्वर भरती है सम्पूर्ण सांस्कृतिक जीवन की केन्द्रबिन्दु है। वर्तमान वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत साहित्य गति कराने वाला ऐसा मार्ग है जहाँ न कोई भटकन है और न कोई उलझन। इसका बहुक्षेत्रीय ज्ञान मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करने में सक्षम है। इसके कल्याण सम्पादक गुण ‘बहुजनसुखाय’ ‘बहुजनहिताय’ विश्वहित साधक है। “संस्कृत साहित्य वह उच्च गिरिशृङ्ग है जिस पर चढ़कर मनुष्य काल के सुदीर्घ स्रोत को बड़ी दूर तक देख सकता है।

आधुनिक वैश्वीकरण में पनपते, कलह-क्लेश, वैमनस्य और

अशान्ति से व्याकुल मानव को शुभ संकल्प और सत्कर्म की आवश्यकता है। ‘तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु का स्वरघोष ही उसे स्वस्थ परिवेश में सांस लेने योग्य बना सकता है। आधुनिक विज्ञान की प्रगति विध्वंसक न हो, इसीलिए उपनिषत्स्वरलहरी ‘असतो मा सद्गमय’, ‘तमसो मा ज्योतिर्गमय’, आज भी सामाजिकों का पथ प्रशस्त करती है। आज विपरीत आचरण करने से जड़ीभूत मन में संवेदनशीलता का प्रादुर्भाव करने वाले मूलमन्त्र ‘मातृदेवो भव’, ‘पितृदेवोभव’ धर्म चर, सत्यं वद आदि संस्कृति के भव्यरूप को संचारित करने में सर्वथा समर्थ हैं। वस्तुतः जगत हमारी चेतना का एक प्रक्षेपण ही तो है। वैदिक सिद्धान्तों की छत्रछाया में जिस अनुपात में हम अपने को सुधारेंगे, संसार उसी अनुपात में अधिकाधिक अच्छा बनता चला जायेगा। आवश्यकता चेतना की है, आवश्यकता एकता की है, आवश्यकता समन्वय की है। हमें कुछ तो बदलना होगा, अकेली गूँज से हटकर सहगान बनाना होगा, अन्धेरे से हटकर सूरज बन चमकना होगा, अवरोधों को खण्डित कर शीतल ब्यार बन बहना होगा। दुश्चरित से बचने और सच्चरित में संलग्न होने की वैदिक प्रार्थनायें ‘विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आ सुव’ ‘मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे’ आज के वैश्वीकरण की अनिवार्यता है और यह संस्कृत साहित्य में ही निहित है।

भौतिकता की होड़ में हांफता मानव आज विश्वास, ईमानदारी, परिश्रम और सच्चाई से उठ सा गया है। अनैतिक साधनों से अपने उद्देश्य की पूर्ति उसकी आदत बन गई है। वैश्वीकरण के इस दौर में आदमी इन्सान बन जाये तो बहुत बड़ी बात है। एक शायर के शब्द याद आ रहे हैं :

**क्या नजर लग गई जमाने को**

**कि अब कोई आँख नम नहीं होती।**

**टोकते सब हैं लड़खड़ाने को**

**कोई बैसाखियाँ नहीं बनता।।**

पतन की ओर धंसते परिवेश में यह अनिवार्य हो गया है कि आज के पाठ्यक्रमों में संस्कृति की मूलभूति संस्कृत को अनिवार्य बनाया जाये। भर्तृहरि के नीतिवचन, वेदों की उदारता, सहकर्मिता, सहचिन्तन, उपनिषदों का संतुलन और गीता की स्थिरप्रज्ञता शिक्षण के अनिवार्य अंग होने चाहिए। व्यक्तिगत स्तर पर सांस्कृतिक मूल्यों के आधान से पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वस्थ परिवेश बन पायेगा। एक नई दिशा मिलेगी। आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और आत्मशक्ति प्राप्त होगी। अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बनाये रखने में यह अनिवार्य है कि आज की सन्तान को संस्कृत से परिचित कराया जाये। संस्कृत जीवन विधि भी है और जीवन निधि भी। टी. वी. में दिखाये जाने वाले अधिकांश सीरियल संस्कृति को पछाड़ रहे हैं। ‘राहुल दुल्हनिया ले जायेगा’ सीरियल की लाखों के वस्त्राभूषणों से सजी दुल्हनें तो यह भी नहीं जानती कि रामायण और महाभारत के रचनाकार कौन हैं? कोई परशुराम कहती है तो कोई हनुमान। हिन्दू विवाह संस्कार के विविध कृत्य पाणिग्रहण, लाजाहोम, सप्तपदी आदि के वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधार को वे क्या जानेंगी?

आज विवाह विधि को छोड़ रहा है और आडम्बरों का शिकार होता जा रहा है। सप्तपदी के अतिशय महत्त्व का परिचायक सप्तपदीनं सख्यम् एक व्यापक लोक व्यवहार है। सख्य में सर्वदा समानता का भाव रहता है। इसमें गौरव का भी भाव रहता है श्वेतहमज दं क वितहपअमश का भाव समरसता बनाये रखता है। पत्नी के प्रति इस प्रकार के उदात्तभाव संस्कृत की ही देन हैं। अधिकार और स्वतंत्रता के आधुनिक संघर्ष ने इस सख्यभाव को नष्ट प्राय सा कर दिया है। एकात्मकता के अभाव में दाम्पत्य क्षीण होकर सामाजिक समझौता मात्र रह गया है। वैदिक वैवाहिक मंत्रों से विदित होता है कि गार्हपत्य का यथावत् पालन अभ्युदय और निःश्रेयस का साधक माना जाता था। यह दाम्पत्य सम्बन्ध केवल शारीरिक भोगवादी सम्बन्ध नहीं अपितु वैचारिक और हार्दिक सम्बन्ध भी है जिससे सुगठित परिवार के माध्यम से सौहार्द्रपूर्ण समाज का निर्माण होता है।

**आदर्शमय जीवन था तब पति पत्नी का**

**धन्य जिससे वेद का युग हो गया।**

**गृहस्थ का वो दिव्यतम कर्तव्य पथ**

**प्रेम और विश्वास में ही खो गया।।**

इसी प्रेम, विश्वास और एकता में दम्पती पुत्र-पुत्रियों, नाती-पोतों से खेलते हुए अपने ही घर संसार में आनन्दित होकर सारी आयु बिता देने की कामना करते हैं। सुमङ्गली, कल्याणदायिनी वधू को आशीर्वाद दिया जाता था कि पति के घर जाकर गृहस्वामिनी, बनकर दीर्घायु भोगे। वधू पति की सहधर्मिणी और जीवन-संगिनी के पद पर सुशोभित थी। सबको अपने स्नेह से अभिसिंचित करती सभी का स्नेहभाजन बन उनके हृदयों में सप्राज्ञी बन विराजती थी। परिवार के संयुक्त जीने की पद्धति में स्नेह था, त्याग था और पवित्रता का विशुद्ध वातावरण था, जो आज कहीं देखने को नहीं मिलता। आज की अस्त-व्यस्त और मस्त जीवन पद्धति में विवाह का यह शुद्ध-बुद्ध स्वरूप कहीं खो गया है। वैश्वीकरण के इस परिवेश में क्छन्न. कंनइसम प्दबवउम छव झपके नामक नई धारणा पनप रही है। अनेकत्व में एकत्व, समग्र जीवन का सानुपातिक विकास, व्यक्ति एवं समष्टि का सामंजस्य, अध्यात्मोन्मुखी जीवनदृष्टि आदि विशेषताएं समाज कल्याण की कसौटी रही हैं। इन उन्नायक तत्वों के अभाव में आज के समाज की नींव चरमरा गई है। आज की नारी जिस स्थिति के लिए प्रयत्नशील है उसकी परिपूर्ण कल्पना संस्कृत साहित्य में उपलब्ध है। वेदों की नारी सभी कार्य करने में समर्थ समाज के हर क्षेत्र में स्थान बनाने वाली एक विश्वस्त और आश्वस्त नारी है।

मातृभूमि व राष्ट्रभावना के सन्दर्भ में भी संस्कृत की उपयुक्तता प्रमाणित है। राष्ट्रैक्य और राष्ट्र सुरक्षा एक सामाजिक कर्तव्य हुआ करता था जहाँ वर-वधू को अपने राष्ट्र की समृद्धि करते हुए ही अपनी समृद्धि करते रहने का आशीर्वाद दिया जाता था। राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय समृद्धि का निर्मल भाव आज के वैश्वीकरण की आवश्यकता है। मन, चित्त और संकल्पों में समानता होने और तदर्थ प्रयत्न करने के उपदेश के साथ-साथ सभा-समितियों में भी सुसंवाद, परस्पर सुसंगति, समानता बनाये रखना, मिलकर चलना, मिलकर बोलना, सौमनस्य बनाये रखने का स्वर गुंजन सामाजिक कल्याण के सुर भरता है।

पहले पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्रविड़, उत्कल, बंग में बंटे भारत को पुनः मेघालय, नागालैण्ड, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड में बंटते हुए देश के लिए समग्र राष्ट्र को अपने घर के समान समझने, सुविधा और अभ्यासानुसार भाषा प्रयोग की स्वतंत्रता देने वाले उस वैदिक चिन्तन की आवश्यकता है जहाँ सब के संगठित होने तथा आपस में कोई द्वेषभाव न रखने की प्रार्थनाएँ नित्य-प्रति की सपर्या हुआ करती थीं। कामना करती हूँ कि इस वैश्वीकरण में राष्ट्रीयधर्म हमारे नेताओं को सद्विचार प्रदान करें ताकि भाषा व जातिभेद से ऊपर उठकर सर्वत्र एकात्मभाव के स्वर गूंज पायें।

राष्ट्रीय वैश्वीकरण के इस युग में आज पुनः उसी मधुर चिन्तन की, परिवारों के उल्लास व सौहार्द की आदर और आदर्श मिश्रित स्नेहिल परिवेश की आवश्यकता है।

दहेज के लोभ में वधुओं को जलाने वाले तथा कन्या-भ्रूण हत्या करने वाले परिवारों को यह बोध अनिवार्य है कि हमारी वैदिक संस्कृति में नारी पुरुष की सहयोगिनी और सहभागिनी थी। वह सप्राज्ञी बन अपने अधिकार और कर्तव्यों को निष्ठा से निभाती, आत्मविकास के पथ पर अग्रसर हो नागरिकता के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए सांस्कृतिक विकास द्वारा समाजसेवा में योगदान देती थी न कि कन्या-भ्रूण हत्या की पात्र बनती थी।

वैश्वीकरण के इस युग में यदि युवाओं को वैदिक जीवन पद्धति का बोध कराया जाये तो आज का सिसकता दाम्पत्य एक सुन्दर, सुवासित दाम्पत्यभाव का आनन्द ले सकेगा। कहीं कोई परिवार नहीं टूटेगा, कोई शिशु माँ-बाप से नहीं बिछुड़ेगा, कहीं कोई कन्या-भ्रूण हत्या न होगी और कहीं कोई युवती यौतुक दहन में नहीं झुलसेगी। पति-पत्नी समरस हो कर एक उज्ज्वल स्वस्थ परिवेश दे पायेंगे।

हमारा सांस्कृतिक न्यास संस्कृत भाषा में ही विन्यस्त है। हमारे समस्त धार्मिक व सांस्कृतिक कृत्य संस्कृत में ही सम्पन्न हैं। अतः संस्कृत से मन, वाणी और क्रिया को सुसंस्कृत

# भारतीय संस्कृति और नारी

– श्री कृष्णचन्द्र टवाणी

विश्व में कई जातियां आई और उत्थान की एक क्षणिक आभा विकीर्ण कर सदा के लिए अस्त हो गई। आज उनका अस्तित्व केवल इतिहास के पृष्ठों पर ही रह गया है परन्तु भारतीय संस्कृति में नारी-शक्ति का महामहिम गौरव मानव-जाति के लिए आदर्श का प्रतीक है। हमारी संस्कृति की आधार-स्तम्भ है - भारतीय नारियां। नारी ने ही अपने प्राणों की ऊर्जा से हिन्दू संस्कृति के लोक पावन प्रवाह को अमर और अक्षुण्ण रखा है। भारतीय संस्कृति के पौधों को नारी ने अपने प्राणों के रस से सींचा और समय आने पर अपने प्राणों को भी न्योछावर कर दिया। यही कारण है कि प्रातःकाल गीता गंगा और गायत्री के साथ-साथ सीता और सावित्री के नाम का भी स्मरण किया जाता है।

माता एक ऐसी शक्ति है जो अपने सभी कष्टों को भूलकर अपनी संतान के कष्टों की मुक्ति के लिए अपना जीवन तक न्योछावर कर देती है। माता की शिक्षा आजन्म बच्चे के पास रहती है। माता में ही ऐसी शक्ति है जो अपने बच्चे के मानवीय ज्ञान के लिए प्रारम्भ से ही अज्ञान का पटल हटाकर उसकी शक्तियों को प्रकाशोन्मुख करती है।

रानी दुर्गावती, महासती सीता, सती सावित्री, सती अनुसूया, सती दमयन्ती, सती शाण्डिली, पांचाली, झांसी की रानी, अहिल्या बाई, चन्मा, दुर्गावती, माँ शारदा, पन्नाधाय आदि कई उदाहरण हैं जिनके आदर्श त्याग, प्रेम के कारण भारत का मस्तक ऊँचा हुआ है। कई शक्ति पीठ हैं जो आसुरी शक्तियों पर विजय के प्रतीक हैं। सभी स्त्रियों को देवी मानकर उनका सम्मान करना, काम-क्रोध-मद-मोह रूपी आंतरिक दोषों को छोड़ना शक्ति उपासना के लिए अनिवार्य एवं अति उपयोगी है। साधुओं की रक्षा, दुष्टों का संहार, वेदों का संरक्षण करने के लिए प्रत्येक युग में देवियाँ आगे आई हैं। “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः”

अर्थात् जहाँ स्त्रियाँ पूजी जाती हैं वहाँ देवता रमते हैं। “यत्र नार्यो न पूज्यन्ते श्मशानं तत्र वै गृहम्।” जहाँ स्त्रियाँ नहीं पूजी जातीं उनका सम्मान नहीं होता वह घर नहीं है श्मशान है। जिस कुल, समाज, देश, राष्ट्र में स्त्री सदाचारिणी है वहाँ अनाचार, व्यभिचार, अधर्म हो ही नहीं सकता। गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में लिखा, “एकइ धर्म एक व्रत नेमा, कायँ बचन मन पति पद प्रेमा”। रामचरितमानस में हम यही पढ़ते हैं कि प्रत्येक नारी पतिव्रत धर्म का पालन करती हैं चाहे सीता हो या मंदोदरी।

किसी भी मानव-समाज में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है तथा राष्ट्र-विकास के लिए भी उतना ही महत्व रखती है। नारी को अपनी निजी पहचान बनाने के लिए समाजरूपी युद्ध क्षेत्र में योद्धा बनकर लड़ना है, वहीं दूसरी ओर घर रूपी मंदिर में एक पत्नी और माँ होने के नाते जिम्मेदारियों के साथ स्नेह की गंगा बहानी है। भारतीय संस्कृति की अस्मिता पर दाग नहीं लगे तथा संस्कार व आदर्श का अन्य देश अनुसरण करें यह सब स्त्रियों पर ही निर्भर है। भारतीय नारी के सदाचार की शक्ति हम सती सावित्री के जीवन से देख सकते हैं जिसने यमराज पर विजय प्राप्त की।

नारी की प्रतिभा से आज घर-आंगन ही नहीं अपितु सारा संसार आलोकित हो रहा है। निश्चय ही नारी सभी क्षेत्रों में शिखर पर पहुँचने का सामर्थ्य रखती है। नारी विविध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से परिवार, समाज एवं राष्ट्र को गौरवान्वित करती है। ब्रह्मज्ञानी गार्गी, माता मदालसा, रेणुका, मैत्रेयी आदि की तुलना ऋषियों से की जाती है। स्वरसाम्राज्ञी लता मंगेशकर इन्दिरा गाँधी, प्रतिभा पाटिल आदि कई महिलाएँ हैं जिनका राष्ट्र एवं समाज के विकास में योगदान रहा है। कल्पना चावला का वैज्ञानिक अनुसंधान में योगदान रहा। वे सभी चिरस्मरणीय हैं। आज भी कर्तव्यपरायण और प्रगतिशील महिलाएँ सफलता के नये मापदंड तय कर रही हैं।

आज आधुनिकता ने हमारी संस्कृति पर कड़ा प्रहार किया है और एक ऐसी देन दी है जिसने मनुष्य को असभ्य बनाना शुरू कर दिया। क्या था हमारा प्राचीन भारतवर्ष और क्या है अब? इस आधुनिकता के भंवर में फँसकर हम अपनी परम्परा,

जीवन मूल्यों को भूल चुके हैं। यहाँ के ऋषि-मुनियों ने आदिकाल से ही विश्व को लोकमंगल का संदेश दिया है। लेकिन आज हम भारतवासी लोक मंगल की भावना भूलकर स्वार्थ सिद्धि में लग चुके हैं। यदि भारतीय नारी अपने अस्तित्व को बचाना चाहती हैं तो पहले उसे अपनी संस्कृति की महत्ता को समझना होगा। यदि राष्ट्र को वास्तव में उन्नति के शिखर पर पहुँचाना है तो परम्पराओं को बचाना होगा, जीवन मूल्यों का पालन करना होगा। गाँधी जी ने कहा था - “धर्मरहित जीवन सिद्धांतरहित जीवन के समान है तथा सिद्धान्तरहित जीवन पतवाररहित नौका के समान है।”

## परिवार द्वारा परिवार की हत्या- भ्रूण हत्या

पिछले दशक में हमारे देश में लड़कियों की संख्या में एक करोड़ सैंतीस लाख की कमी हुई है। सरकार ने अब भ्रूणहत्या पर कानून बनाया है। हम यह नहीं सोचते कि जिस भ्रूण की हत्या कर रहे हैं उसमें सीता, सावित्री, गीता, यशोदा, देवकी, जीजाबाई, अहिल्या, लता मंगेशकर आदि हो सकती हैं।

आज चन्द पैसों के लिए नारियों ने अपनी संस्कृति को भुला दिया है। फैशन शो के नाम पर चमकीले, भड़कीले कपड़ों का प्रयोग अपने आप में हिंसा को जन्म देता है। साबुन हो या तेल, दवा हो या कार, मकान हों या मोबाइल प्रत्येक वस्तु के विज्ञापन में नारी का ही चित्र विभिन्न मुद्राओं में दिखाई देता है। नारी को भोग्या के रूप में प्रस्तुत कर यौन-अपराधों में वृद्धि हुई है। स्त्रियों में आत्मविश्वास और कर्तव्य का भी विकास हो, इस दृष्टि से राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना की गई है। समाज में फैले अंधकार को स्त्री ही सुसंस्कारों से दूर कर सकती है। महिलाएँ इस बात पर गंभीरता से विचार करें कि आज युग में उनकी वास्तविक भूमिका क्या है? यदि मातृशक्ति कल्याणकारी रूप लेकर समाज के सामने खड़ी होती है तो सम्पूर्ण समाज सुखमय बन जायेगा।

भारतीय नारियों को चाहिए कि वे अपने चरित्र को शुद्ध करें। समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मूल है चरित्र। सत्य, विनय, करुणा, क्षमा, स्नेह, सहानुभूति, आत्म निर्भीकता, वीरता, आत्म-त्याग जितने भी मानव-जीवन के आदर्श हैं, सब चरित्र के अंतर्गत आ जाते हैं। वास्तविक सुख, संतोष और आनन्द सदाचार से मिलता है। सदाचार हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार “सुना स्वर्ग क्या है? सदाचार है, मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार है।”

भारतीय नारी को अपनी संस्कृति की रक्षा हेतु निम्न परम्पराओं को अवश्य अपनाना चाहिए। क्योंकि इनका वैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्व है।

1. अपनी मांग में सिन्दूर अवश्य लगाना चाहिए इसका वैज्ञानिक कारण भी है। यह शारीरिक विद्युतीय उर्जा को नियंत्रित करता है तथा गर्भस्थान को दुष्प्रभाव से बचाता है।
2. तुलसी की पूजा तथा उसके पाँच पत्तों का सेवन करना। वैज्ञानिकों के अनुसार तुलसी के पत्तों का सेवन अनेक रोगों के उपचार में भी उपयोगी है।
3. स्तनपान कराने से माता को मातृत्व व बच्चों को शिशुत्व की पुष्टता मिलती है, दोनों का स्वास्थ्य ठीक रहता है एवं परस्पर प्रीति बढ़ती है। यह बात डॉक्टर भी मानते हैं कि माँ का दूध बच्चे के लिए अमृत है।
4. भोजन शाकाहारी हो। भारतीय परम्परा के अनुसार भोजन प्रतिदिन यज्ञ के उपरान्त प्रसाद के रूप में ग्रहण करना चाहिए। हिन्दूधर्म में गाय को माता कहकर पुकारा है इसलिए सबसे पहले गोघ्रास की रोटी निकालनी चाहिए। घर पर आये हुए अतिथि को भोजन कराने के पश्चात् परिवार के बुजुर्गों एवं बच्चों को भोजन करा कर फिर स्वयं भोजन करना चाहिए।

## पारिवारिक जीवन को सुखी बनाने का सूत्र :-

पति-पत्नी को अपने दाम्पत्य जीवन में एक-दूसरे की भावना का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा परस्पर एक दूसरे का पूरा सम्मान करना चाहिए। नारी का आदर्श सेवा और नम्रता

है। सास को बहू के साथ बेटी-सा व्यवहार करना चाहिए। बहू की कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। घर की शांति के लिए बहू और सास को प्यार से रहना चाहिए। अपने परिवार की आय के अनुसार अपने खर्चों को सीमित करना चाहिए। फैशन का दीवानापन घर को बरबाद कर देता है। दूसरों की देखा-देखी अपनी हैसियत से अधिक कीमती वस्त्रों, जेवर, प्रसाधनों तथा आमोद-प्रमोद पर खर्च नहीं करना चाहिए। यदि पत्नी नौकरी या किसी व्यवसाय में संलग्न है तो पति-पत्नी को आपस में समन्वय की भावना से अपने दाम्पत्य-जीवन को सुखी बनाना चाहिए। परिवार के प्रत्येक सदस्य को अहं का त्याग कर सहनशीलता व प्रेम के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखना चाहिए।

## माता ही प्रथम गुरु है :-

बच्चों को उत्तम संस्कार प्रदान करने में माताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों की शिक्षा के लिए पहला गुरु माता को माना गया है। इसलिए हमारे शास्त्रों ने पिता से अधिक माता को महत्व दिया है। हम जो प्रार्थना करते हैं, उसमें सबसे पहले माता का ही नाम आता है - “त्वमेव माता च पिता त्वमेव”। इसी तरह श्रुति ने भी “मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव” कहकर माता को ही प्रथम स्थान दिया है। यदि माताएँ संस्कार वाली होंगी तो उनकी संतानें भी संस्कारवान् होंगी। आज आवश्यकता है शिवाजी की माता जीजाबाई एवं शहीद भगत सिंह की माँ विद्यावती के समान माताओं की, जिन्होंने अपने बच्चों को संस्कारित जीवन में ढालकर उन्हें त्याग, शौर्य और बुद्धि में दक्ष बनाया। बुरे मित्रों की बुरी संगति का भी संस्कारों के पनपने पर विशेष प्रभाव पड़ता है। दो तोतों की कहानी प्रसिद्ध है। एक व्यक्ति के पास दो तोते पिंजरे में बंद थे। एक दिन पिंजरा खुला रह गया। एक तोता साधु के आश्रम में चला गया और दूसरा तोता डाकू के यहाँ चला गया। साधुवाला तोता सत्संग के असर से राम-राम कहने लगा और डाकू वाला कुसंगति के असर के कारण मारो-मारो कहने लगा। इसलिए माता-पिता को सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि उनके बच्चों का सच्चे अर्थों में मित्र कौन है? साथ ही यह भी निरीक्षण करते रहना चाहिए कि मित्र उनके साथ कोई अनुचित कार्य तो नहीं कर रहा है। माता-पिता को चाहिए कि वे अपना कुछ समय बच्चों के साथ भी बितायें। उनके स्कूल के कार्य को भी देखें। समय-समय पर विद्यालय या स्कूल में जाकर बालकों की प्रगति के बारे में उनके कक्षाध्यापक से बातचीत करनी चाहिए। बच्चों के आचरण, चाल-चलन, खान-पान, रहन-सहन आदि पर माताओं को विशेष ध्यान रखना चाहिए। आजकल अधिकांश महिलाएँ भी नौकरी या अन्य व्यावसायिक कार्यों में व्यस्त रहती हैं। जिससे वह अपने बच्चों के आचरण, चाल-चलन के बारे में कुछ भी ध्यान नहीं दे पाती हैं। माता-पिता को अपने बच्चों को पवित्र संस्कृति से परिचित करवाना होगा, तभी हम अपने अस्तित्व, देश की महत्ता को बचा पायेंगे। अपनी परम्परा से ही हम विकास, समृद्धि की धारणाओं को सफल बना पायेंगे।

महिलाएँ प्रगति की ओर अग्रसर हों, किन्तु अपनी संस्कृति व परम्परा को न भूलें। अपनी नैतिकता को सदा सुरक्षित रखें। आज महिलाएँ अर्थ के पीछे दौड़ रही हैं और पुरुष के बराबर उन्नति कर रही हैं। वे चाहे जितनी प्रगति कर लें किन्तु यदि उनका कोई आदर्श नहीं है, जीवन-मूल्य नहीं हैं तो भला ऐसी प्रगति जो हमारी संस्कृति व परम्पराओं की अवहेलना करती हो उसके क्या लाभ? जिस प्रकार ऊँचे से ऊँचा भवन भी मजबूत नींव के बिना नहीं टिक सकता उसी प्रकार जीवन-मूल्यों के बिना जीवन भी आधारहीन है। भारत का आधार ही इसकी संस्कृति है, यदि यही नहीं रही तो बिना आधार के नारी का प्रगतिशील या आधुनिक होना कोई महत्व नहीं रखता। हमारी संस्कृति के मूलभाव में सदाचरण है जिसे नारी अपनाकर ही अपना तथा समाज का कल्याण कर सकती है।

- सिटी रोड, मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)-305801





स्वामी श्रद्धानन्द व पं० रामप्रसाद बिरिमल  
बलिवान स्मृती, कन्या भूषण-हत्या,  
अंधविश्वास व नशा खोरी के विरुद्ध

महर्षि दयानन्द सारस्वती

## प्रांतीय आर्य महासम्मेलन

### जीवन्त

#### जिम्हण पत्र

कार्यक्रम

**दिनांक 14 दिसम्बर 2025**  
यज्ञ प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक  
आर्य महासम्मेलन 10 बजे से 4 बजे तक

स्थान : महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम  
3705 अर्बन एस्टेट, जीवन्त

संयोजक : **स्वामी रामवेश जी**  
प्रधान नशाबन्दी परिषद्  
हरियाणा

समयवेद

**युवा सम्मेलन 10 बजे से 12 बजे तक**

अध्यक्ष : श्री अशोक वर्मा प्रधान आर्य समाज (विरसा)  
मुख्य अतिथि : श्री पवन गर्ग, प्रसिद्ध समाजसेवी  
उद्घाटन : श्री सुनील कार्ल एडवोकेट, मोहम्मदखेड़ा (युवा नेता)  
विशिष्ट अतिथि : श्री रणवीर लोहान नारनौद, प्रधान, वारी इण्डिया  
श्री देवेन्द्र सिंह साहाराण जुलानी  
श्री सोहन पुनिया, एम.डी. सार्वी क्लरसेज, केवल  
श्री वेद प्रकाश आर्य सेवानिवृत्त अतीक्षक, HBSE  
श्री निरज कालवा, किला पार्थद वार्ड 21 जीवन्त  
मुख्य वक्ता : स्वामी आदित्यवेश राष्ट्रीय महापरिषद्, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्  
आचार्य राजेन्द्र गुरुकुल कालवा,  
श्री जयभगवान शारस्त्री (प्रसिद्ध समाजसेवी)  
श्री इन्द्रजीत आर्य प्रधान आर्य समाज नरवाना  
बहन प्रवेश आर्या व पुनम आर्या, देवेन्द्र आर्य,  
श्री महेन्द्र सिंह श्योकन्द  
श्री महिपाल सिंह दिल्ली  
श्री मनजीत सिंह आर्य कालवा  
श्रीमती संतोष श्योराण नगर पार्थद जीवन्त  
मंच संचालन : श्री जगपूल सिंह दिल्ली

**नशाखोरी व कन्या भूषण हत्या विरोधी सम्मेलन 12 बजे से 2 बजे तक**

अध्यक्ष : स्वामी ओमवेश वर्मान विचारक एवं पूर्व गंगा गन्गी उ.प्र. सरकार  
मुख्य अतिथि : श्री सुभाष श्योराण एम.डी. इण्डिया युव  
उद्घाटन : श्री मेलाराम दीवाल, गुरुकुल प्रसिद्ध समाजसेवी  
विशेष अतिथि : श्री जगदीश वीर, संरक्षक आर्य समाज विरसा  
श्री वजीर झांझा, एम.डी. आर्य वी. सी. स्कूल अहिरका  
श्री सत्यवीर शारस्त्री, गुलाटी, पंजाब  
श्री देवेन्द्र सिंह लोहान, एडवोकेट पूर्व प्रधान वार एसोसिएशन, जीवन्त

मुख्य वक्ता : स्वामी विजयवेश, गुरुकुल  
आचार्य हरिदत्त उपाध्याय गुरुकुल लाठीत रोहताक  
श्री कर्णसिंह रेड्, पंचकुला  
श्री दलवीर सिंह आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा  
प्रिंसिपल आजाद सिंह, पुन पब्लिक स्कूल सोनीपत  
मा० जगदीश चन्द आर्य, खान्ना खंडी

**राष्ट्र रक्षा सम्मेलन 2 बजे से 4 बजे तक**

अध्यक्ष : स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली  
मुख्य अतिथि : देवेन्द्र सैनी, प्रधान आर्य समाज नागरी गेट हिसार  
उद्घाटन : श्री नरेन्द्र आर्य मिंगलानी, मंत्री आर्य समाज नागरी गेट, हिसार  
विशेष अतिथि : श्री रमेश दिल्ली, प्रधान, डेयरी एसोसिएशन जीवन्त  
विरजानन्द आर्य, राजस्थान  
श्री० बुलाराम युआ  
श्री० बलजीत सिंह हुड्डा, गांव करेला

मुख्य वक्ता : स्वामी प्रणवानन्द, गुरुकुल नौलानगर दिल्ली  
प्रो० बिट्टल राय, मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली  
श्री० रणधीर सिंह रेड्, एडवोकेट हाईकोर्ट चण्डीगढ़  
श्री सत्यप्रकाश आर्य मंत्री, गुरुकुल धीरगवास  
श्री सोमदत्त रेड्, एडवोकेट

**ध्वजारोहण : श्री० जिले सिंह लोहान, गुलकनी (जीवन्त)**

अध्यक्ष : श्री विमल मोर एडवोकेट  
मुख्य अतिथि : श्री मेलाराम दीवाल, गुरुकुल  
श्री० रामनिवास दिल्ली, जहोला  
श्री० इन्द्र सिंह, ललित खेड़ा  
श्री० रविन्द्र झांझा, एडवोकेट  
मा. कर्ण सिंह, शाहपुर  
श्री० राजपाल आर्य, प्रधान आर्य समाज जुलानी

अध्यक्ष : श्री जगदीश पांचाल, नमून  
मुख्य अतिथि : श्री धर्मवीर आर्य, पूर्व सरपंच मोहिया  
श्री० रामचन्द्र आर्य, रामली  
श्री योगेश्वर मुनि, उषाना मन्दी  
प्रिंसिपल आजाद सिंह, सोनीपत  
श्री० यादवीन्द्र खर्ब, जीवन्त

**आमन्त्रित वक्ता, विद्वान् व भजनोपदेशक**

सहदेव शारस्त्री, स्वामी मुक्तिवेश, मा० श्याम लाल आर्य मंत्री आर्य समाज कैथल,  
श्री० सुबेर सिंह आर्य, श्री० बलवन्त सिंह आर्य सीसर खरबला, डॉ. भूप सिंह आर्य,  
श्री० रामलाल आर्य गुरुकुल, श्री० इन्द्रसिंह पूर्व एस.डी.एम. (निवासी),  
श्री० रघुवीर सिंह मलिक, श्री सत्यवीर आर्य कैथल, प्रिंसिपल नरक सिंह मलिक, विद्या  
सागर शारस्त्री, प्रसिद्ध भजनोपदेशक सहदेव सिंह वेधड़क, प्रिंसिपल विजेन्द्र बूरा,  
श्री रघुवीर बूरा, कुलदीप आर्य बिजनौर, हवा सिंह कृकान व सुनील शारस्त्री उषाना।

**निवेदक**

श्री० पिरथी सिंह चहल, भोम सिंह आर्य, कमलदीप रेड् एडवोकेट हाईकोर्ट,  
मा० राजवीर सिंह आर्य, श्री० बलजीत सिंह हुड्डा, डॉ. राजपाल आर्य,  
सतपाल आर्य, नरेश आर्य, जोरा सिंह आर्य, दयानन्द आर्य, सुयदेव आर्य,  
मा० आनन्द प्रकाश आर्य, मा० बलवीर सिंह आर्य, जिले सिंह आर्य, कर्मपाल  
आर्य, डॉ० पवन आर्य, धर्मवीर दिल्ली, कैप्टन रामदत्त आर्य, प्रो० महावीर  
सिंह, महेन्द्र पाल आर्य, राजेन्द्र शारस्त्री, महेन्द्र दिल्ली, सुरजमल खटकड़,  
श्री० जसवन्त सिंह आर्य, सुरजमल पहलवान, टैकराम छातर, वजीर सिंह  
आर्य, रामधारी आर्य खटकड़, मा० सज्जन सिंह राठी, मा० अजीत पाल आर्य,  
मा० अशोक आर्य, श्री दलवीर सिंह आर्य, डॉ० रणवीर सिंह मलिक, डॉ०  
सतवीर सिंह आर्य, श्री० जुगती राम श्योराण, श्री रामनिवास आर्य, श्रीमति  
सरला चौधरी आर्या, श्रीमति विनिता गुलाटी आर्या, श्रीमति विमला आर्या,  
शक्ति सिंह आर्य, प्रिंसिपल होशियार सिंह आर्य, श्री० कर्मचन्द फौजी, प्रो०  
कुलवीर सिंह रेड्, कर्ण सिंह राठी, रामशेर सिंह आर्य, मा० प्रदीप देशवाल,  
अश्विनी आर्य, सुशील आर्य, मा० केवल सिंह जुलानी, श्री सतवीर सिंह  
दहिया, श्री० बलवान सिंह आर्य कण्डेला, ऋषिपाल दिल्ली, नवनीत आर्य  
खोखरी, श्री रणवीर सिंह आर्य, श्री जयवीर सिंह झांझा, डॉ० सुरेश दलाल,  
राजेन्द्र सिंह मलिक, चरण सिंह झांझा, हरपाल सिंह बुल, कैप्टन जोगिन्द्र  
सिंह खटकड़, सुलतान सिंह आर्य, बलवीर सिंह दिल्ली, वेदपाल अलेया,  
राजेश खोखरी, सुखदेव दिल्ली, योगाचार्य जोरा सिंह आर्य, रामफल दिल्ली  
व शमशेर बरसोला, श्री० सतपाल कुण्ड, पार्थद, जीवन्त, श्री० सुरत सिंह  
दिल्ली, वेद्य देवेन्द्र रायचंदवाला, श्री सुबे सिंह खोखरी, श्री सतपाल  
जाजवान, रविन्द्र पवार, योगी परमवीर व समस्त मैनैजमेंट सरस्वती  
स्कूल-घोघड़ियां।

नोट : आर्य महासम्मेलन में आप इष्ट मित्र सहित, सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

**HARYANA ELECTRICAL**  
हॉलवेल रेट पर इलेक्ट्रिक सामान मिलता है।  
METAL BOX | PVC PIPE | FAN | WIRES  
Inverter Battery | Fancy Light

Boljeet Khatkar  
70157-27880

Mandeep Dhanda  
79885-57327, 72069-92612

Gali No. 1, Bharat Nagar, Gohana Road, By Pass Chowk, Jind-126102 (Hry.)

## आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद का 42वां वार्षिकोत्सव 17 से 23 नवम्बर, 2025 तक भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

### सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य सोमदेव जी (राजस्थान) एवं श्री कुलदीप आर्य (भजनोपदेशक) के हुए व्याख्यान



अध्यात्म वैदिक संस्कृति, मानव कल्याण, समाज सुधार, नैतिकता व अध्यात्मवाद से ओत-प्रोत विविध सम्मेलनों एवं कार्यक्रमों का आयोजन आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद के 42वें वार्षिकोत्सव के अवर पर दिनांक 17 से 23 नवम्बर, 2025 तक किया गया। कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त, आचार्य सोमदेव जी—राजस्थान, स्वामी सूर्यवेश जी—उपाध्यायक्ष श्री शम्भू दयाल आश्रम, गाजियाबाद एवं प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य के प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम चलता रहा।

21 नवम्बर, 2025 को प्रातःकाल समाज सुधार सम्मेलन एवं सायं वेद सम्मेलन में स्वामी आर्यवेश जी के विशेष उद्बोधन हुए। समाज सुधार सम्मेलन में बोलते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आज समाज में विविध कुरीतियाँ निर्बाद गति से बढ़ती जा रही हैं। जातिवाद का जहर समाज को खोखला कर रहा है। इसी प्रकार नशाखोरी, अश्लीलता एवं नरनता, लिब-इन-रिलेशनशिप एवं समलैंगिक विवाह जैसी अनैतिक गतिविधियाँ बढ़ती जा रही हैं। अतः इनके विरुद्ध राष्ट्र स्तर पर

अभियान चलाया जाना चाहिए। स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में संकेत किया कि हाल ही में मुजफ्फरनगर जिले के सोरम गांव में सम्पन्न हुई सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत ने जो प्रस्ताव पारित किये हैं वे सभी आर्य समाज की मान्यताओं एवं आर्य समाज के घोषणा पत्र के अनुरूप हैं। सर्वखाप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। स्वामी जी ने आर्य समाज के सभी सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं से अपील की कि हमें अपने सिद्धान्तों को मजबूती के साथ अपनाना चाहिए। किसी भी स्तर पर हमें सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं करना चाहिए। समाजिक बुराईयों के विरुद्ध यदि हमें अपने परिवार एवं निकट के लोगों के विरुद्ध भी खड़ा होना पड़े तो उसमें भी हम कोई संकोच न करें, तभी जाकर आर्य समाज जन-जन तक अपनी पहचान बना पायेगा। स्वामी जी ने कहा कि समाज में बुराईयों को बढ़ाने में केवल बुरे लोग ही जिम्मेदार नहीं हैं बल्कि अच्छे लोग जो बुराई का विरोध नहीं करते वे भी जिम्मेदार हैं। समाज सुधार के लिए एक मजबूत अभियान चलाने की आवश्यकता है ताकि आर्य समाज से

अतिरिक्त अन्य लोग भी इस अभियान का हिस्सा बन सकें।

वेद सम्मेलन में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि वेद में राष्ट्र की अवधारणा अनेक मंत्रों में व्यक्त की गई है। 'वयं राष्ट्रे जागृत्यामः पुरोहिता।' हम राष्ट्र के जागरूक प्रहरी, पुरोहित बनें। इसी प्रकार वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना में राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने की प्रार्थना की गई है। कहने का तात्पर्य यह है कि वेद में राष्ट्र की अवधारणा इस रूप में दी गई है कि हमारा राष्ट्र किस प्रकार से सुखी, सम्पन्न, समृद्ध एवं शक्ति सम्पन्न हो सके।

आचार्य सोमदेव जी के प्रवचन 17 से 23 नवम्बर, 2025 तक निरन्तर चलते रहे और श्री कुलदीप आर्य जी के भजनों का कार्यक्रम भी निरन्तर चलता रहा जिससे श्रोताओं ने विशेष ज्ञान लाभ प्राप्त किया।

आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद एक सक्रिय आर्य समाज है और समय-समय पर वहां विविध कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। इस उत्सव में सर्वश्री सुभाष चन्द्र गुप्ता, श्री मनोज चौहान, श्री ओम प्रकाश आर्य, डॉ. ओम प्रकाश शर्मा, डॉ. वीरेन्द्र नाथ सरदाना, श्री शंकर लाल शर्मा, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, श्री तेजपाल आर्य प्रधान जिलासभा गाजियाबाद, श्री कृष्ण शास्त्री कोषाध्यक्ष जिलासभा, श्री नरेन्द्र पांचाल मंत्री जिलासभा आदि की विभिन्न सम्मेलनों में भूमिका रही तथा उत्सव की सम्पूर्ण व्यवस्था आर्य समाज के संरक्षक श्री श्रद्धानन्द शर्मा, प्रधान डॉ. वी.एन. सरदाना, मंत्री श्री सत्यवीर चौधरी, कोषाध्यक्ष श्री शशिवल गुप्ता, स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती कौशल गुप्ता, मंत्री श्रीमती शिल्पा गर्ग, कोषाध्यक्ष श्रीमती वंदना अरोड़ा आदि पदाधिकारियों का विशेष पुरुषार्थ रहा। कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।



## आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता कैप्टन तेज सिंह श्योराण की स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

### सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी ने दी श्रद्धांजलि

आर्य समाज आहुलाना, जिला—सोनीपत के कर्मठ कार्यकर्ता कैप्टन तेज सिंह श्योराण का गत दिनों असामयिक निधन हो गया। उनकी स्मृति में आर्य समाज आहुलाना में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पहुंचे। 17 नवम्बर, 2025 को प्रातः 8 से 10 बजे तक हुए शांति यज्ञ में स्वामी आर्यवेश जी ने जहां दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की वहीं अपने आध्यात्मिक प्रवचन से परिवारजनों का ढाँढस भी बंधाया। इस अवसर पर युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी व श्रीमती नीलम आर्या (टिटौली), श्री अशोक कुमार मलिक (मदीना), श्री कुलदीप सिंह (गंगाना) आदि भी श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित हुए। आर्य समाज के पदाधिकारियों सर्वश्री विजयपाल आर्य, श्री पवन आर्य, श्री विजयपाल श्योराण, श्री सत्यवीर आर्य, श्री भूप सिंह, श्री जगवीर सिंह शास्त्री आदि ने यज्ञ की व्यवस्था की। स्व० कै० तेज सिंह के सुपुत्र श्री दीपक सपत्नीक यज्ञ में यजमान बनें तथा उनकी बेटी श्रीमती भारती खत्री अमेरिका से अपनी पूज्य पिता की शांति यज्ञ में सम्मिलित हुई। कार्यक्रम में उपस्थित सैकड़ों लोगों ने दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।



## आर्य समाज, नागोरी गेट, (लाजपतराय चौक) हिसार के वार्षिकोत्सव के अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में विशाल शोभा यात्रा का आयोजन



आर्य समाज, नागोरी गेट, (लाजपतराय चौक) हिसार के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 14 नवम्बर, 2025 को विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया तथा इसका संयोजन आर्य समाज के उपप्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री दलवीर आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला। शोभा यात्रा से पूर्व आर्य समाज नागोरी गेट के प्रधान श्री देवेन्द्र सैनी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ज्योति सैनी के मुख्य यजमानत्व में यज्ञ किया गया जिसमें श्री विष्णु गोयल एवं श्री सुनील बंसल सपत्नीक सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री बलराज मलिक भी यज्ञ में सपत्नीक सम्मिलित हुए। यज्ञ का सम्पदान आर्य समाज के पुरोहित श्री कर्मवीर शास्त्री ने किया। यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी तथा श्री देवेन्द्र सैनी ने संयुक्त रूप से ध्वजारोहण किया और स्वामी आर्यवेश जी के संक्षिप्त उद्बोधन के पश्चात् ओ३म् ध्वज के द्वारा शोभा यात्रा को प्रारम्भ कराया। शोभा यात्रा सी.ए.वी. हाई स्कूल से प्रारम्भ होकर नगर के सभी प्रमुख बाजारों से

होती हुई गुजरती और पूरे हिसार नगर को वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द जी की जय-जयकार से गुंजा दिया। स्थान-स्थान पर यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। लोगों ने फल, बिस्कुट, चाय आदि बाँटकर अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। कई स्थानों पर फूल-पतियां, संन्यासियों एवं उपदेशकों पर डालकर स्वागत किया गया।

आर्य समाज के प्रधान श्री देवेन्द्र सैनी के व्यापारिक प्रतिष्ठान, हरियाणा बीज भण्डार की ओर से सभी लोगों को जलपान कराया गया और शोभा यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। शोभा यात्रा में स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, आर्य समाज के प्रधान श्री देवेन्द्र सैनी, उपप्रधान श्री दलवीर आर्य, मंत्री श्री नरेन्द्र मिगलानी, कोषाध्यक्ष श्री बलराज मलिक, पार्षद श्री हरि सिंह सैनी, पूर्व कोषाध्यक्ष एवं अन्तरंग सदस्य श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री जयवीर सोनी, श्री बलवन्त आर्य न्याना, कन्या गुरुकुल पंचगांव की आचार्या डॉ. जया कुमारी, कन्या गुरुकुल डोभी के प्रबन्धक श्री परमजीत शास्त्री, गुरुकुल आर्यनगर के आचार्य रामस्वरूप, गुरुकुल धीरणवास के आचार्य रामवीर एवं अन्य अध्यापक गण, गुरुकुल कुम्भाखेड़ा से श्री मनोज आर्य, गुरुकुल फतेहाबाद से श्री सुनील शास्त्री, स्वामी मुक्तिवेश, श्री योगेश्वरमुनि वानप्रस्थी, महाशय दीपचन्द्र आर्य, श्री सत्यपाल अग्रवाल, श्री सीताराम आर्य-आर्यनगर, श्री महेन्द्र सिंह आर्य-आर्यनगर, बेटा बचाओ अभियान, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम से बहन प्रवेश आर्या एवं 15 कार्यकर्ता, श्री ईश आर्य आदि के

अतिरिक्त अनेक गणमान्य लोग सम्मिलित रहे। शोभा यात्रा के अग्रिम पंक्ति में पांच घोड़ों पर आर्य समाज के कार्यकर्ता श्री शमसेर वानप्रस्थी नम्बरदार —लाडवा के नेतृत्व में चल रहे थे। विभिन्न गुरुकुलों के ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारियों ने बीच-बीच में व्यायाम प्रदर्शन जिसमें लाठी, तलवार, स्तूप एवं जूटा-कराटे का प्रदर्शन करके लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। पूरी शोभा यात्रा भगवा पगड़ियों, ओ३म् ध्वज एवं ओ३म् के पट्टकों से सजी हुई थी। लोगों के मुख से एक ही प्रतिक्रिया सुनने को मिली कि ऐसी शोभा यात्रा आर्य समाज द्वारा बहुत लम्बे समय के बाद निकाली गई है। शोभा यात्रा को व्यवस्थित बनाये रखने के लिए आर्य समाज के कार्यकर्ता पूरी तन्मयता के साथ अपना दायित्व निभा रहे थे। पदाधिकारियों में प्रधान श्री देवेन्द्र सैनी, मंत्री श्री नरेन्द्र मिगलानी, पूर्व कोषाध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बलराज मलिक, पार्षद श्री हरि सिंह सैनी पूरी यात्रा में पैदल चलते हुए प्रशासन बना रहे थे। यात्रा का प्रभाव देखते ही बनता था। शोभा यात्रा का समापन आर्य समाज नागोरी गेट में हुआ। यात्रा के संयोजक श्री दलवीर आर्य ने सभी का हार्दिक आभार व्यक्त किया।



पृष्ठ 1 का शेष

## विश्व विख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज के नेतृत्व में हरिद्वार में ऐतिहासिक शोभा यात्रा का आयोजन



एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि 5 हजार साल के पश्चात् वेदों को प्रतिस्थापित करने का कार्य केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किया। आज योग और आयुर्वेद को लेकर पूरे विश्व में स्वामी रामदेव जी महाराज ने भी ऐतिहासिक कार्य किया है। आज वे योग के विश्वगुरु हैं। हम चाहते हैं कि स्वामी जी इसी प्रकार आगे बढ़ते रहें और पूरी मानवता का मार्ग दर्शन करते रहें।

स्वामी आदित्यवेश जी ने भी अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत करते हुए इस ऐतिहासिक आयोजन की सफलता के लिए स्वामी

यतीश्वरानन्द जी को हार्दिक बधाई दी और स्वामी रामदेव जी महाराज का आभार व्यक्त किया।

स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने भी इस अवसर पर अपना आशीर्वाचन देते हुए कहा कि इस पूरे आयोजन की सफलता में त्रिदेव की भूमिका महत्वपूर्ण है। त्रिदेव में पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज जो पूरे विश्व में योग का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। स्वामी आर्यवेश जी महाराज जो पूरे आर्य समाजों का संचालन करने वाली शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा के प्रधान हैं और स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज जो बड़े जुझारू और कर्मठ



युवा संन्यासी हैं। यह सम्मेलन एवं शोभा यात्रा निःसंदेह बेहद सफल है।

कार्यक्रम के संयोजक स्वामी यतीश्वरानन्द सरस्वती जी ने उपस्थित विशाल जनसमूह का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए अपने सभी सहयोगियों को कोटिशः धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के सभी पदाधिकारी, कार्यकर्ता, आर्य समाजों के अधिकारी व सदस्य, विभिन्न गुरुकुलों के आचार्य, आचार्याएं एवं शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाचार्य, दूर-दूर से आये हुए आर्य समाज के सभी अधिकारी, कार्यकर्ता एवं

अगले पृष्ठ पर जारी





पृष्ठ 5 का शेष

## विश्व विख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज के नेतृत्व में हरिद्वार में ऐतिहासिक शोभा यात्रा का आयोजन



सदस्य तथा सैकड़ों की संख्या में उपस्थित सभी संन्यासी, वानप्रस्थी एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारी आदि की गरिमामयी उपस्थिति से आज का यह कार्यक्रम सफलता की चरम पर है। हमारी आशा से अधिक उपस्थिति को देखकर हमारे सभी साथी उत्साहित हैं। स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने स्वामी रामदेव जी महाराज का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि जिस कार्य में स्वामी रामदेव जी का सान्निध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त हो जाये वह असफल हो ही नहीं सकता। स्वामी जी बहुत विशाल हृदय और ऊर्जा से भरपूर व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने इस पूरे आयोजन की व्यवस्था के भार से हमें मुक्त करके बहुत बड़ी कृपा की और इसीलिए आज यह विशाल कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हो रहा है। स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी ओमवेश जी का भी धन्यवाद किया और कहा कि मुझे स्वामी द्वय का प्रारम्भ से सहयोग एवं स्नेह मिलता रहा है। आज उनकी उपस्थिति से भी यह कार्यक्रम और अधिक गरिमापूर्ण बना है। स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने आचार्य बालकृष्ण जी महाराज एवं पतंजलि योग पीठ, स्वामी दर्शनानन्द गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के सभी संन्यासियों एवं कार्यकर्ताओं का भी हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया।

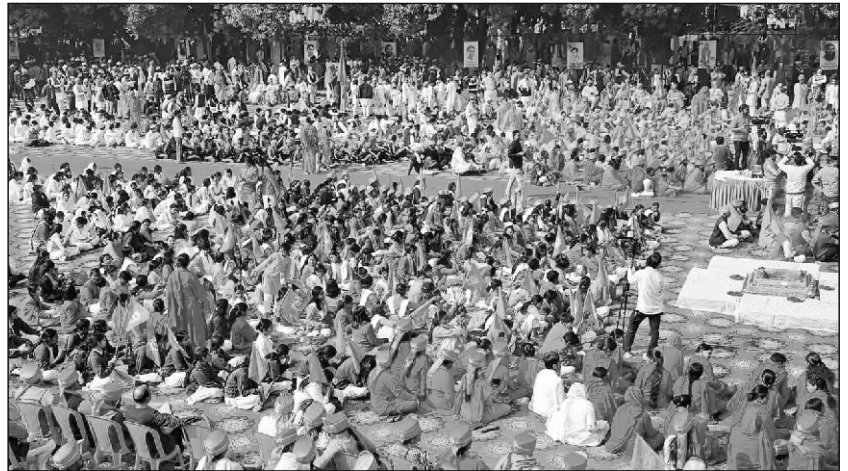
ठीक 12.30 बजे शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई। जिसे पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज ने झण्डी दिखाकर प्रारम्भ कराया। शोभा यात्रा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से प्रारम्भ होकर शिव मूर्ति चौक, हरिद्वार तक गई। जहाँ सिटी मजिस्ट्रेट हरिद्वार को एक ज्ञापन पत्र भेंट किया गया। ज्ञापन को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पढ़कर सुनाया और उसके पश्चात् सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा गया। इस ज्ञापन पत्र में उत्तराखण्ड

के राज्यपाल से मांग की गई है कि भारत को विश्वगुरु और श्रेष्ठ भारत बनाने के लिए यह आवश्यक है कि (1) भारत को नशामुक्त किया जाये और नशाबन्दी की राष्ट्रीय नीति घोषित किया जाये। (2) गो संरक्षण के लिए गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये। (3) समान आचार संहिता लागू की जाये। (4) जनसंख्या नियंत्रण हेतु कानून बनाया जाये। (5) संभावित बुलेट ट्रेन, अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा जेवर (अलीगढ़) अथवा किसी अन्य अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम से घोषित किया जाये। (6) हरिद्वार में महर्षि दयानन्द जी का एक भव्य स्मारक बनाया जाये आदि मांगों से युक्त ज्ञापन पत्र भारत सरकार तथा राष्ट्रपति को भिजवायें।

ज्ञापन पत्र भेंट करने के बाद शोभा यात्रा विसर्जित की गई। शोभा यात्रा के मार्ग में अनेक स्थानों पर फल, बिस्कुट, प्रसाद एवं जलपान की भी व्यवस्थाएं की गई थीं। नगर के कई व्यापारिक संस्थानों, धार्मिक संस्थाओं एवं आर्य समाजों ने आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, वेद मंदिर गीता आश्रम, ज्वालापुर आदि की ओर से स्वागत किया गया। पूरी यात्रा का नेतृत्व स्वामी यतीश्वरानन्द जी कर रहे थे और उनके साथ सभी संन्यासी एवं कर्मठ कार्यकर्ता पैदल चल रहे थे। इस शोभा यात्रा में दर्शनानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, मैत्रेयी कन्या गुरुकुल लक्सर, एंग्लो वैदिक गुरुकुल पुरकाजी, गुरुकुल उग्रपुर, सहारनपुर, कन्या गुरुकुल नजीबाबाद, द्रोण स्थली कन्या गुरुकुल देहरादून, आर्ष ज्योति गुरुकुल पौधा, देहरादून, आचार्यकुलम गुरुकुल आदि संस्थाओं के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों द्वारा शोभा यात्रा में व्यायाम प्रदर्शन का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

कार्यक्रम में सर्वश्री मानपाल सिंह राठी पूर्व प्रधान उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री हाकम सिंह आर्य पूर्व प्रधान जिला सभा, हरिद्वार, श्री प्रेम प्रकाश शर्मा मंत्री तपोवन आश्रम देहरादून, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी एडवोकेट पूर्व प्रधान उत्तराखण्ड आर्य

प्रतिनिधि सभा, श्रीमती इन्दूबाला उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, डॉ. वीरेन्द्र पंवार प्रबन्धक हरिद्वार आर्य समाज, डॉ. शिव कुमार शास्त्री पूर्व प्रधान आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, स्वामी मेधानन्द पतंजलि योगधाम, श्री संदीप आर्य—आर्य वीरदल, डॉ. योगेश शास्त्री, श्री अशोक कुमार, श्री बिजेन्द्र शास्त्री, चन्दवानी परिवार, स्वामी योगेश्वरानन्द देहरादून, श्री ओम प्रकाश मलिक देहरादून, श्री अशोक वर्मा देहरादून, श्री महिपाल सिंह आर्य प्रधान जिला आर्य सभा सहारनपुर, श्री अनूप राठी मंत्री जिला सभा मुजफ्फरनगर, श्री गजेन्द्र राणा मुजफ्फरनगर, श्री रमाकान्त सारस्वत एवं श्री अरविन्द मेहता (आगरा), श्री बलवन्त सिंह चौहान, आचार्य हरिगोपाल शास्त्री, श्री पवन आर्य, श्री तेलूराम आर्य, श्री राम कुमार आर्य, आचार्य अमन सिंह शास्त्री, श्री राजेश आर्य, श्री नितिन आर्य, श्री अवनीश आर्य (रठौड़ा), श्री धर्मेन्द्र कुमार (छपराेली), श्री सज्जन राठी एवं श्री मास्टर अजीतपाल (जीन्द), श्री ऋषिराज शास्त्री व स्वामी मुक्तिवेश (टिठौली), श्री बिरजानन्द एडवोकेट, श्री राम निवास—नारनौल, स्वामी ओमानन्द, स्वामी चेतनानन्द, स्वामी सोम्यानन्द, आचार्य सविता जी आदि के अतिरिक्त सैकड़ों कर्मठ कार्यकर्ता जो अपने—अपने क्षेत्र से गाड़ियां भरकर लोगों को लेकर आये थे उन सभी को स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने विशेष धन्यवाद एवं सम्मान देकर विदा किया। कार्यक्रम के दौरान पतंजलि योग पीठ की ओर से गायकों ने भी भजन प्रस्तुत किये।



## मास्टर श्री जिले सिंह दलाल जी का आकस्मिक निधन



प्रसिद्ध आर्य सामाजिक कार्यकर्ता मा. श्री जिले सिंह दलाल जी का विगत दिनों आकस्मिक निधन हो गया है। श्री जिले सिंह दलाल जी एक श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में अपने जीवन में सदैव सत्य, सेवा और सादगी के आदर्शों का पालन किया तथा अपने बच्चों को भी उच्च शिक्षा के साथ समाजसेवा और मानवता की भावना के मार्ग पर अग्रसर रहने के लिए प्रेरित किया। मास्टर जी का पूरा परिवार आर्य समाज एवं वैदिक विचारधारा से ओत-प्रोत है तथा समाजसेवा के कार्यों में सदैव अग्रसर रहता है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि मेरे सुपरिचित और मास्टर जी के सुयोग्य सुपुत्र श्री हरिओम दलाल, आर्य समाज के एक प्रतिष्ठित कार्यकर्ता एवं नेता हैं तथा आर्य समाज की गतिविधियों में सदैव सक्रिय भूमिका निभाते हैं। श्री जिले सिंह

जी जैसे समाजसेवी एवं प्रेरणास्रोत व्यक्तित्व का अचानक हम सबके बीच से चले जाना निःसंदेह परिवार एवं आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है। मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आदरणीय स्व० श्री जिले सिंह दलाल जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

## श्री रवि नैयर की को मातृ शोक



श्री रवि नैयर की पूज्या माता श्रीमती दमयन्ती देवी नैयर जी का आकस्मिक निधन हो गया है। पूज्या माता जी एक धर्मपरायण, समाज सेविका एवं विशेष रूप से गौ—सेवा के लिए समर्पित माता थीं। उन्हीं की प्रेरणा से श्री रवि नैयर जी गौसेवा सहित अनेक समाजसेवा के कार्यों में निष्ठा के साथ संलग्न रहते हैं और वर्तमान में आर्य समाज आदर्शनगर, जयपुर में अपना योगदान विशेष रूप से कर रहे हैं। वे भाजपा के भी अग्रणी नेता हैं। दिवंगत पूज्या माता दमयन्ती जी ने अपने संपूर्ण परिवार को धार्मिक संस्कारों से ओत—प्रोत एवं परिपूरित किया। वे सदैव परोपकार एवं समाजसेवा के विभिन्न कार्यों में संलग्न रहीं। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। ऐसी धर्मपरायण, विदुषी एवं समाजहितकारी माता के निधन से परिवार तथा समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पूज्या माता जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

## श्री हरवीर शास्त्री जी के छोटे सुपुत्र श्री अजरानन्द का आकस्मिक निधन



समाज सेवा में अहर्निश संलग्न मानव सेवा प्रतिष्ठान के संस्थापक सदस्य व उपप्रधान गुरुकुल गौतम नगर व गुरुकुल झज्जर के स्नातक पूर्व प्रिंसिपल श्री हरवीर सिंह शास्त्री, कलायत कैथल (हरियाणा) के छोटे सुपुत्र श्री अजरानन्द का दिनांक 8 नवम्बर, 2025 की रात्रि लगभग 10 बजे एक दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। 9 नवम्बर को गांव कलायत की श्मशान भूमी पर पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार श्री रामपाल शास्त्री, श्री सोमदेव शास्त्री, श्री सुभाष शास्त्री व श्री बलेन्द्र शास्त्री स्नातक गुरुकुल गौतम नगर आदि ने सम्पन्न कराया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि भाई श्री हरवीर सिंह शास्त्री जी के छोटे सुपुत्र की 20 वर्ष की छोटी सी आयु में सकड़ दुर्घटना के कारण अकस्मात देहावसान निःसंदेह बेहद दुःखद एवं हृदय विदारक है। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा आदरणीय भाई श्री हरवीर शास्त्री जी व समस्त परिवार जनों को इस असहनीय कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

॥ ओ३म् ॥

कृष्णन्तो विश्वमार्यम्

**आर्य समाज 150** स्वर्ण जयन्ती

स्वर्ण जयन्ती

आर्य समाज पाबूपुरा स्थापना के 50वां स्वर्णिम वर्ष के स्वर्ण जयन्ती के गौरवपूर्ण वर्ष के शुभ अवसर पर

**51 कुण्डीय संस्कार एवं संस्कृति रक्षा महायज्ञ**

दिनांक :- 7 दिसम्बर 2025, रविवार

स्थान : आर्य समाज पाबूपुरा, गौरव पथ, सिविल एयरपोर्ट रोड, पाबूपुरा, जोधपुर (राज.)

**: सानिध्य :**

स्वामी आर्यवेशजी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली)

स्वामी आदित्यवेशजी (राष्ट्रीय महासचिव, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद, हरियाणा)

आप सभी को अत्यंत हर्ष के साथ आमन्त्रित करते हुए सूचित किया जाता है कि आर्य समाज पाबूपुरा के 1975-2025 स्थापना के 50 वर्ष पर स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर "51 कुण्डीय संस्कार एवं संस्कृति रक्षा महायज्ञ" आयोजित किया जा रहा है, जिसमें आर्य संन्यासी, आर्यवीर, आर्य विरागनाएँ, आचार्य, आर्य नेता एवं राजनेताओं की गरिमामयी उपस्थिति में आप सभी पाबूपुरा एवं जोधपुर के सभी धर्म प्रेमी बन्धुओं से प्रार्थना है कि आप अधिक से अधिक संख्या में इस कार्यक्रम में पधारकर इस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव में शामिल होकर आर्य समाज के संगठन शक्ति का परिचय देकर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ावें।

इस ऐतिहासिक स्वर्ण जयन्ती महोत्सव में "51 कुण्डीय संस्कार एवं संस्कृति रक्षा महायज्ञ" कार्यक्रम में आपका तन, मन व धन से सहयोग अपेक्षित है, कृपया सहयोग राशी क्रॉस बैंक, मनी ऑर्डर, ऑन लाईन द्वारा आर्य समाज पाबूपुरा, जोधपुर पंजीकृत पंजाब नेशनल बैंक खाता सं. 0712000100362981 IFSC Code : PNBPNB0071200 जोधपुर नाम कार्यालय के पते पर भिजवाएँ। ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड तेल, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागीदार बने।

जोधपुर के बाहर से आने वाले आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि 1 दिसम्बर 2025 तक आने की सूचना सूचित करने की कृपा करें, जिससे आपके भोजन एवं आवास का उचित प्रबन्ध किया जा सके।

सम्पर्क सूत्र : 9414476888, 9571163889, 9782418024, 9414498842

**: निवेदक :**

|                                  |                            |                         |                          |                        |
|----------------------------------|----------------------------|-------------------------|--------------------------|------------------------|
| भंवरलाल आर्य<br>कार्यक्रम संयोजक | भंवरलाल हठवाल<br>अध्यक्षता | चम्पालाल आर्य<br>प्रधान | रितेश आर्य<br>कोषाध्यक्ष | रोशनलाल आर्य<br>मंत्री |
|----------------------------------|----------------------------|-------------------------|--------------------------|------------------------|

**अतिरंग सदस्य :-** सर्वश्री जयनारायण आर्य, भंवरलाल बिंवाल, गुलाबचन्द आर्य, शंकरलाल आर्य, नेमीचन्द आर्य, देवकिशन आर्य, सोनपाल आर्य, विनोद आर्य, अरूण आर्य, वेदप्रकाश आर्य, रत्नेश्वर शास्त्री, प्रवीण आर्य, विनय आर्य, अविनाश आर्य एवं समस्त सदस्यगण

**महिला आर्य समाज :-** श्रीमती सजनादेवी, श्रीमती सरोजदेवी, श्रीमती प्रेमलता, श्रीमती कमलादेवी, श्रीमती लक्ष्मीदेवी, श्रीमती मुन्नीदेवी, श्रीमती सुषमा आर्या, श्रीमती सवितादेवी, श्रीमती विमलेश, श्रीमती नीलुदेवी, श्रीमती अरती, श्रीमती किरण कुमारी नायक, श्रीमती पिंकी श्रीमती कोमल, श्रीमती ज्योति, श्रीमती प्रेरणा आर्या, श्रीमती मीनादेवी, श्रीमती सुनीता, कुमारी अदिति एवं समस्त महिला सदस्य

**आर्य वीर दल अर्जुन शाखा :-** श्री सुगेन्द्र हठवाल (शाखा संचालक), महेश लोहरा (शाखा नायक), हर्ष आर्य (अप शाखा नायक)

**: आयोजक :**

आर्य समाज पाबूपुरा, महिला आर्य समाज पाबूपुरा, आर्यवीर दल, अर्जुन शाखा (गौरव पथ नागरिक, हवाई अड्डा रोड, पाबूपुरा, जोधपुर)



# Incarnation of God

How the theory of incarnation of God, became a common belief amongst the Hindus and also amongst other followers of religion, is a very interesting subject. Even the Western philosophers agree that there is not trace of this theory in Vedas and Upnishads. The Christian belief is also of personal God which is more or less shared by Islam. A description of this idea occurs in verses 7 and 8 of Gita.

The interpretation of these verses is that to safeguard the sages, destroy evil doers, and for restoration of Dharma (religion) Shri Krishna manifests himself in all ages. It is no where clearly mentioned in the above verses that God who is all pervading is born in physical form to ac-complish the afore-said objectives. Ac-cording to some thinkers, the idea of incarnation of God entered the Arya Hindus belief when they had become weak in mind and physique. This idea was a consolation to them that the Avtar will take revenge from those who were oppressing the Arya Hindus. In fact the high personalities like Shri Rama and Shri Krishna and the golden deeds they performed, prove that they were liberated souls who according to Swami Dayananda descended on the earthly plane to guide the people in the discharge of their duties.

Now let us consider about the significance of Dharma. Commonly people think that Dharma is another word for religion. But it is not so. Dr. Radhakrishna, the then President of India, in his speech at the National Integration Conference held in 1961 declared that Dharma

is that which holds society together, whatever divides disintegrates society, creates sects, that is Adharma.

Shri Rabindra Nath Tagore defines Dharma as duty. But I think the Dharma referred to in two verses of Gita quoted above, apparently means Arya Dharma. Now let us examine from practical point of view whether it is absolutely essential for God to take up physical form to ac-complish certain objectives. In our times, we have witnessed the strikes by postmen, navy men, clerical staffs, bus conductors etc. But it has never come to the notice of any one that the Director General of Post Offices or the Minister incharge of that department doing the job of a postman during the course of postal strikes. Similarly when clerical staff resorted to strikes and office work was paralysed the high officials of that department did not perform the duties of clerks. The same occurred in the case of all other strikes. From this, it can be safely inferred that those holding high positions, would never like to shift to lower status whenever there is a departure from duty by their subordinates. But the propagandists of the theory of incarnation of God want us to believe that God, the highest authority in the universe, does not mind to take up the lower and limited status casting off all His highest attributes, merely to carry out certain objectives defined in the Gita. This is in fact devoid of reason and common sense. There are no valid reasons to hold that God took up

the physical forms merely to kill cruel kings namely Harnakashyap, Ravana, Kansa etc. and to settle the disputes over kingdom between Kauravas and Pandavas princes. How surprising it is that God is not caring to descent on the earthly plane at the present times when Dharma's more degenerating than the times of Ramayan and Mahabharat?

The other significant point is that Gautam Buddha has been classified as 22th Avtar (incarnation of God in the Puranas, although Buddhism founded by Buddha basically differs in many doctrines of Vedic Dharma and its teachings had at one time in the history of India; reduced the followers of Arya Dharma to mere minority sect. However Adi Sankaracharya who is credited with the work of survival of Vedic Dharma, was not exalted to the position of Avtar. Similarly Raja Ram Mohan Ray, Swami Dayananda, Swami Ram Kirshna Paramhans and Swami Vivekananda are not called Avtar although all of them served the cause of revival of Vedic Dharma so brilliantly. From all that has been discussed above it is crystal clear that there is not the slightest justification to believe in the theory of incarnation of God.

'So high is His lofty grandeur, yea, the Absolute One is even greater than this. All the existing beings are (only) one part of His (effulgence) and three parts of His immortal (essence) exist in His selfluminous being. - Yaj. XXXI.3

- S. B. Mathur

**आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने तथा आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थ आश्रम, नोएडा का वार्षिकोत्सव समारोह**

**दिनांक - 10 से 14 दिसम्बर, 2025 (बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार व रविवार) तक समारोह पूर्वक मनाया जायेगा**

**स्थान - बी-69, सैक्टर-33, नोएडा (उ. प्र.), दूरभाष - 0120-2505731, 9899349304, 8826989222, 9871798221**

धर्मानुरागी सज्जनों एवं देवियों! प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज नोएडा के प्रांगण में वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यों का विशाल मेला लग रहा है। इस अवसर पर मूर्धन्य विद्वानों, संन्यासियों एवं नेताओं के विचार एवं भजनोपदेशकों के मधुर भजन श्रवण करने को मिलेंगे। आप सभी से विनम्र प्रार्थना है कि इस अविस्मरणीय आध्यात्मिक आनन्द के लिए अवश्य पधारें।

मुख्यरूप से सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, वैदिक विद्वान् डॉ. वेदपाल जी, प्रसिद्ध दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह जी, निदेशक एमिटी शिक्षण संस्थान श्री आनन्द चौहान जी, अध्यक्ष ईशान इंस्टीट्यूट श्री डी. के. गर्ग जी, प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. दिनेश पथिक जी सहित अनेकों विद्वानों एवं संन्यासियों तथा भजनोपदेशकों के उद्बोधन एवं सारगर्भित प्रवचन एवं भजन सुनने को मिलेंगे। इस अवसर पर दिनांक 10 व 11 दिसम्बर, 2025 को चतुर्वेद शतक यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम रहेगा तथा दिनांक 12 दिसम्बर, 2025 को प्रातः 10 बजे से भव्य विशाल शोभा यात्रा का आयोजन रहेगा। यह यात्रा आर्य समाज सैक्टर-33 से आरम्भ होकर नोएडा के विभिन्न सैक्टरों से वाहनों द्वारा गुजरेगी। आप सभी आर्यजनों से विशेष निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम में अपनी भागीदारी निभायें।

- अशोक गुलाटी, मंत्री

पृष्ठ 2 का शेष

## आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयोगिता

करना होगा। आज वैश्वीकरण के युग में सभी अनुष्ठान औपचारिकता मात्र रह गये हैं। इनके प्रति शिथिलता और उदासीनता आज का फैशन है। बहुत बड़ी विडम्बना है कि आज का मानव इनकी वैज्ञानिकता से अनभिज्ञ है। इस स्थिति में संस्कृत की उपयुक्तता और भी बढ़ जाती है। हमारे विविध याज्ञिक आग्नेय अनुष्ठान केवल शरीर और मन को ही शुद्ध नहीं करते वे पर्यावरणीय शुद्धि में भी सहायक हैं। इन कृत्यों में किये जाने वाले मन्त्रोच्चारण से प्रसृत स्वर लहरियों से श्वसजतैवदपवअमे ज्तमंजउमदजश के समान रोगाणुओं को नष्ट करने की सामर्थ्य है। 'सह नावतु सह नो भुनक्तु सह वीर्यं करवावहे' का सहभागित्व ही आज के वैश्वीकरण की पुकार है।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में संस्कृति के नैतिक, सामाजिक, दार्शनिक तथा राष्ट्रीय प्रसंग में संस्कृत की उपयुक्तता पूरे विश्व में है। विश्वशान्ति के लिये 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्', मानव व प्रकृति के सुन्दर, स्वस्थ पर्यावरण के लिए 'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः', राष्ट्रेय के लिए 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी', 'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी' आदि निर्देश महत्त्वपूर्ण हैं। संसदभवन में 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय', डाकतार वाहनों पर 'अहर्निशं सेवामहे' जीवन बीमा निगम में 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' शिक्षा संस्थानों में विद्ययाऽमृतमश्नुते 'निष्ठा धृतिः सत्यम् तमसो मा ज्योतिर्गमय' आदि सारगर्भित वाक्य आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की सर्वप्रचलित उपयुक्तता को ही प्रमाणित करते हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि संस्कृत एकविषयात्मिक नहीं है। यह विविध विषयों की शृंखला है। यदि आज के पाठ्यक्रम में

संस्कृत निबद्ध तत्-तत् अंश विभिन्न विषयों में निर्धारित कर दिये जायें तो भारत का ही नहीं, विश्व का प्रत्येक नागरिक अपने अतीत को अधिक समझ पायेगा, वर्तमान में विशेष सन्तुलित व्यवहार कर पायेगा और अपने भविष्य के प्रति उल्लसित होकर उचित आचरण कर पायेगा। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में यह नितान्त अनिवार्य है कि संस्कृत की विषय शृंखला विविध विषयों से सुसम्बद्ध हो पाये। राजनीति में कौटिल्यशास्त्र की, कानून में मनुस्मृति की, आयुर्वेद में चरक व सुश्रुत संहिता की अनिवार्यता विषयों को तत्त्वतः जानने में सहायक भी होगी और उपयोगी भी। वाणिज्य व व्यावसायिक प्रबन्धन भी संस्कृत निष्ठा होने पर विशेष सुभग बन सकता है। चेतना, नैतिक मूल्याङ्कन, सदसंकल्प व परिश्रम आज के प्रबन्धन की कड़ियाँ हैं।

उपनिषदों में प्रतिपादित आत्मदर्शन ;पदजतवेचमवजपवदद्ध आत्मश्रवण (अपने दोषों को सुनने की सामर्थ्य) और आत्मनिदिध्यासन ैमसि दंसलेपेद्ध वैश्वीकरण के इस युग में मानव को सद्-दृष्टि देने में सक्षम हैं। आज इसी आत्मदर्शन, आत्मश्रवण और आत्मनिदिध्यासन की आवश्यकता है।

आज की मानवता अलगाव और अकेलेपन की मर्मन्तक पीड़ा से सन्त्रस्त है। संस्कार प्रधान संस्कृति आज की अनिवार्यता है। विनय, आदर, वृद्धसेवा आज की पुकार है। सुसंस्कृत व्यवहार और आचरण जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। यह तथ्य यदि आज की पीढ़ी समझ पाये तो तब तक ।हम भवउमे की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आधुनिक सभ्यता से पीड़ित और उपेक्षित वृद्ध भी अपने-अपने परिवारों में सुखद जीवन बिता सकेंगे और 'पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम्, अदीनाः स्याम शरदः शतम्' को

सार्थक कर पायेंगे।

वैश्वीकरण के युग में संस्कृत की उपयुक्तता इस तथ्य में भी निहित है कि संस्कृतनिष्ठ व्यक्ति किसी भी विकट स्थिति से सहजता से उभर सकता है। गीता की स्थितप्रज्ञता, उपनिषदों का आध्यात्मिक ज्ञान, वेदों का शुभसंकल्प उसे आश्वस्त कर उसकी राहों के दीपस्तम्भ बन उपस्थित होते हैं। सत्यं शिवं सुन्दरं की अजस्र धारा निरन्तर सिंचित करती उसे पल्लवित और विकसित करती हैं।

आशा करती हूँ कि वैश्वीकरण के इस दौर में संस्कृति के सकारात्मक चिन्तन की दीपशिखा निरन्तर जगमगाती रहे। दीप से दीप प्रज्वलित होता रहे, लोक कल्याण की सुरभि चहुँदिक महकती रहे। मेरा मानना है कि संस्कृत वह चिराग है जो हकीकत है - सच्चाई है। वह रोशनी है जो हमारी मायूसियों से मद्धम हुए चिरागों को रोशन करती है। वह जीवन तत्व है जो हमें भाव, विचार और अभिव्यक्ति का उचित अनुपात सिखाती है। जियो और जीने दो का पाठ पढ़ाती है हमें इस योग्य बना देती है कि हम किसी के फटे लिवास को टांक सकें, किसी के मन की आबरू बन सकें। संस्कृत वस्तुतः अमृत की बूँदें हैं। आव-ए-हयात के कुछ कतरे हैं। संस्कृत वह शाश्वत चिन्तन है जो अहसास कराता है हम कौन थे, हम क्या हैं और क्या होंगे अभी। आज के वैश्वीकरण परिवेश में संस्कृत मानो मानव को कह रही है :-

**खुशबू हूँ मैं, फूल नहीं हूँ जो मुरझा जाऊँगी,  
ममता का आंचल बन के तुम को लोरी सुनाऊँगी  
मेरे गीत सहारा देंगे मीत बन कर सहलाऊँगी  
अनदेखा तारा बन करके राह मैं तुम्हें दिखाऊँगी।**



**सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें**



आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :-  
[www.facebook.com/SwamiAryavesh](https://www.facebook.com/SwamiAryavesh) व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : [aryavesh@gmail.com](mailto:aryavesh@gmail.com)

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ -  
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा  
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

**वीतराग आर्य संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी द्वारा स्थापित**

**वैदिक ज्ञान आश्रम वर्कशॉप रोड, यमुनानगर का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया**  
**वर्तमान में आर्य समाज की प्रासंगिता और अधिक बढ़ गई है - स्वामी आर्यवेश**  
**स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान सर्वाधिक रहा - स्वामी आदित्यवेश**  
**वैदिक जीवनशैली अपनाकर व्यक्ति शतायु प्राप्त कर सकता है - लाजपत राय चौधरी**  
**यदि सुख विशेष (स्वर्ग) की कामना है तो यज्ञीय जीवन अपनायें - आचार्य धर्मेन्द्र शास्त्री**

**स्त्री शिक्षा का अधिकार दिलाया महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने - डॉ. प्रतिभा पुरन्धि**

**वेद विद्या का स्वाध्याय ही मुख्य तीर्थ है - नीरज नरूला**



आर्य जगत के वीतराग संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी द्वारा स्थापित वैदिक ज्ञान आश्रम, यमुनानगर का वार्षिकोत्सव दिनांक 15 एवं 16 नवम्बर, 2025 को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, तेजस्वी युवा संन्यासी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी मुक्तिवेश जी, वयोवृद्ध आर्यनेता श्री लाजपत राय चौधरी, इडा कन्या गुरुकुल उद्धमपुर (जम्मू) की प्राचार्या डॉ. प्रतिभा पुरन्धि, वैदिक विद्वान् आचार्य धर्मेन्द्र शास्त्री, युवा विद्वान् आचार्य विपिन शास्त्री, वैदिक विद्वान् श्री इन्द्रजीत देव, युवा भजनोपदेशक श्री प्रताप वैदिक आदि विद्वान् एवं विदुषियों ने भाग लिया।

इस दो दिवसीय उत्सव में यज्ञ के ब्रह्मा पद को आचार्य धर्मेन्द्र शास्त्री ने सुशोभित किया तथा यजमान के रूप में श्री दीपक व श्रीमती ज्योति, श्री संजीव नरूला एवं श्रीमती नीरज नरूला, श्री अनुज कम्बोज एवं श्रीमती साक्षी कम्बोज, श्री सचिन एवं श्रीमती सुनैना आदि ने आहुतियाँ प्रदान कर यज्ञ को सम्पन्न कराया। कार्यक्रम में करनाल से पधारि श्रीमती प्रिया आर्या एवं माता .....जी, श्रीमती सोनिया आर्या ने भी अपने विचार एवं भजन प्रस्तुत किये।

आश्रम के संरक्षक एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में बताया कि आर्य समाज की प्रासंगिता वर्तमान समय में पहले से भी अधिक बढ़ गई है। धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड, सामाजिक अन्याय, महिला उत्पीड़न, नशाखोरी, अश्लीलता एवं हिंसा से युक्त फिल्मों का प्रचलन तथा सोशल मीडिया पर प्रस्तुत की जा रही अश्लील सामग्री का प्रचार-प्रसार चरम सीमा पर है। उपरोक्त कुरीतियों के विरुद्ध किसी भी राजनीतिक दल अथवा धार्मिक, सामाजिक संस्था की ओर से आवाज नहीं उठाई जाती और न ही उन्हें इसकी चिन्ता है। आर्य समाज प्रारम्भ से ही समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जन-जागरण करते हुए प्रखर प्रहरी की भूमिका निभा रहा है। अब वर्तमान समय में और अधिक सक्रियता के साथ इन सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध अभियान चलाना होगा। आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा, दलितोद्धार, विधवा पुनर्विवाह एवं धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध जो आन्दोलन चलाये उसके परिणामस्वरूप बहुत कुछ सफलता भी मिली। बाल विवाह, सतीप्रथा, देवदासी प्रथा, छुआदूत आदि के विरुद्ध भी आर्य समाज के प्रचार के कारण कानून बन गये। किन्तु आज अन्य ज्वलन्त समस्याओं के कारण समाज निरन्तर पतन की ओर जा रहा है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज की आवश्यकता है। आर्य समाज लोकशक्ति का



प्रतिनिधि है और सरकार लोकसत्ता की प्रतिनिधि है। यदि लोकशक्ति और लोकसत्ता मिलकर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध कार्य करें तो सफलता की सम्भावना और अधिक बढ़ सकती है। स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक ज्ञान आश्रम को प्रचार का एक प्रमुख केन्द्र बनाने पर जोर दिया। उन्होंने स्थानीय आर्यजनों से अपील की कि इस आश्रम के माध्यम से न केवल यमुनानगर और जगाधारी, बल्कि पूरे ग्रामीण क्षेत्र तक हम आर्य समाज के प्रचार को ले जा सकते हैं। हम सभी इस आश्रम को मिलकर सक्षम बनायें और यहां से प्रचार का कार्य तेज करें।

स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका अन्य सभी संगठनों से अधिक रही है। स्वतंत्रता आन्दोलन में जेल जाने वाले और बलिदान होने वाले शहीदों में 80 प्रतिशत लोग आर्य समाजी थे। किन्तु दुर्भाग्य है कि स्कूल और कॉलेजों में आर्य समाज के योगदान को नहीं पढ़ाया जाता। उन्होंने कहा कि स्वराज्य प्राप्ति की घोषणा सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने की थी और उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में उल्लेख किया था कि विदेशी राजा कितना भी अच्छा हो, कितना भी करे वह स्वदेशी राजा से अच्छा नहीं हो सकता।

आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता करनाल से पधारे श्री लाजपत राय चौधरी ने कहा कि वैदिक जीवनशैली अर्थात् सात्विक भोजन, नियमित दिनचर्या और सात्विक विचार अपनाने से व्यक्ति शतायु हो सकता है। उन्होंने बताया कि मैं स्वयं 93 वर्ष की आयु में अपने सभी दैनिक कार्य स्वयं करता हूँ और निरन्तर कार्यरत रहता हूँ।

जम्मू से पधारी डॉ. प्रतिभा पुरन्धि ने स्त्री शिक्षा पर बल

दिया और कहा कि स्त्री शिक्षा का द्वार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने खोला था। इससे पहले स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार नहीं था।

आचार्य धर्मेन्द्र शास्त्री जी ने यज्ञ पर अपने प्रवचन देते हुए कहा कि यदि सुख विशेष (स्वर्ग) की कामना करते हो तो यज्ञ करो और अपने जीवन को यज्ञमय बनाओ।

युवा विद्वान् आचार्य विपिन शास्त्री ने वेद मंत्र की सुन्दर व्याख्या करते हुए जीवन के उद्देश्य की सुन्दर समीक्षा की।

इस पूरे कार्यक्रम की संयोजक एवं वैदिक ज्ञान आश्रम की मंत्री श्रीमती नीरज नरूला ने बड़ी कुशलता के साथ कार्यक्रम का संयोजन किया। उन्होंने सभी आगन्तुकों को कोटिशः धन्यवाद करते हुए कहा कि प्रतिवर्ष हम वेद ज्ञान की गंगा वैदिक ज्ञान आश्रम के माध्यम से इसी प्रकार बहाते रहेंगे। आप सभी लोगों का स्नेह एवं सहयोग मिलता रहेगा तो निश्चित रूप से यह आश्रम वेद प्रचार का एक विशेष केन्द्र बनेगा।

युवा भजनोपदेशक श्री प्रताप वैदिक के भजनों एवं उपदेशों का भी विशेष आनन्द श्रोताओं ने उठाया।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आश्रम के अध्यक्ष श्री सत्यवीर कम्बोज, मंत्री श्रीमती नीरज नरूला, कोषाध्यक्ष श्रीमती तारावती सैनी, व्यवस्थापक श्री धर्मपाल आर्य, श्रीमती पूनम आर्या, श्रीमती ज्योति, श्री दीपक, श्री राकेश ग्रोवर आदि ने विशेष पश्रिम एवं प्रयत्न किया। अपनी युवा टोली को होनहार युवक श्री आलोक सुपुत्र श्री संजीव नरूला ने भोजन वितरण व्यवस्था को बड़ी कुशलता के साथ संभाला। उनके सभी युवा कार्यकर्ताओं ने निष्ठा के साथ सेवा की। आश्रम के परम सहयोगी श्री सरदार जी भी सेवा कार्य में दोनों दिन अपने अन्य सहयोगियों के साथ संलग्न रहे। नगर की विभिन्न आर्य समाजों से डॉ. सतीश बंसल, श्री महेन्द्र सिंघल, श्री जितेन्द्र चण्डोक, श्री संजय चौधरी, श्री नरेन्द्र, श्री नरेश एवं श्री पवन आर्य, श्री वर्मा जी आदि भी सम्मिलित रहे। कार्यक्रम पूरी सफलता एवं उत्साह के बाद सम्पन्न हुआ। दोनों दिन ऋषि लंगर की समुचित व्यवस्था की गई थी जिसमें सभी आर्यजनों ने अपना सहयोग प्रदान किया। इस पूरे आयोजन के संयोजक के रूप में श्री संजीव नरूला का विशेष योगदान रहा। वैदिक विरक्त मण्डल के संगठन मंत्री स्वामी सोम्यानन्द जी एवं वैदिक ज्ञान आश्रम में स्थाई निवास कर रहे स्वामी आत्मानन्द की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : [sarvadeshik@yahoo.co.in](mailto:sarvadeshik@yahoo.co.in), [sarvadeshikarya@gmail.com](mailto:sarvadeshikarya@gmail.com) वैबसाइट : [www.vedicaryasamaj.com](http://www.vedicaryasamaj.com)

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतेक्यता होना अनिवार्य नहीं है।